



शरफ़ ख़ीदोव

तुफ़्तान भुक्का
सकता नहीं

Raduga Publishers, 30, Navoi street, Tashkent — 129, Uzbekistan. U.S.S.R.

© 'रादुगा' प्रकाशन, ताशकन्द — १९८२

P $\frac{70303-077}{031/011-82}$ 763-82

4702570200

खूबानी पर फूल आये

मुरातअली की नीन्द सदा की तरह तडके खुली। वह अहाते में ऊँचे खवूतरे पर सोया करता था और हर सुबह सबसे पहले जिस चीज़ पर उसकी नज़र पड़ती थी, वह थी खूबानी की लम्बी-लम्बी धनी शाखाएँ। उसकी पत्तियों के बीच से गहरा नीला आकाश और धुंधलाते अन्तिम तारे भाक रहे होते।

मुरातअली थोड़ी देर तक पुष्पित खूबानी का आनन्द उठाता लेटा रहता। फूल कोपलो से सद्य प्रस्फुटित पत्तियों की झिलमिलाती हरियाली को आच्छादित कर रहे श्वेत-पाटल बादल में घुल-मिल जाते। यह वृक्ष कतारताल के सबसे गरीब किसान, मुरातअली के पिता ने लगाया था। उसने केवल जीवन के अन्तिम दिनों में ही, जब वह सामूहिक फार्म में शामिल हुआ, जाना था कि सुख क्या होता है।

खूबानी की उस पर झुक रही शाखाओं को निहारते हुए मुरातअली को अपने पिता के मृत्यु-पूर्व कहे शब्द स्मरण हो आते "मेरी खूबानी सौ बरस फूलेगी और सौ बरस भरपूर फल देगी। और, मेरे बेटे, तुम भी सौ बरस जियो, और लोगो को तुम्हारी मेहनत का खूब फल मिले "

मुरातअली का दिन रोज़ाना एक ही ढंग से शुरू होता था भोर की हलकी धुंध, खूबानी की डालियाँ वह इसका आदी हो चुका था, और यदि जागने पर अपने ऊपर वे डालियाँ नहीं दिखती, तो उसे जीवन निराश्रित और मूना प्रतीत होता।

आज उसे दिन-भर काफ़ी काम करने थे। मुरातअली ने जल्दी से

कपड़े पहने, सूबानी के नीचे लगी चिन्मन्ची में हाथ-मुँह धोये और पानी साने चल पड़ा।

मुरातअली का घर एक पहाड़ी की ढलान पर बना था, त्रिमरी तलहटी में बसा गाँव कटोरे-मा नज़र आता था। दूर, ढलानों के बीच में एक नदी बहती थी। उसका उद्गम पहाड़ों में ऊँचाई पर था, बहती-बहती वह पहाड़ी सोनों का शीतल जल जमा करके अनेक छोटे-छोटे चश्मों के मिलने से बनी निर्मल फीरोज़ी पानी की भील से पूर भरती। भील के किनारों पर बेदों की कतारें लगी हुई थी; यही कारण था कि भील, नदी और गाँव का नाम भी कतारतान (बेदों की कतार) पड़ गया।

नदी छिछली थी और गरमियों में लगभग पूरी ही सूख जाती थी शाम को गपशप करने, पहाड़ों से आती ताज़ा व स्वच्छ हवा का सेव करने के लिए जमा हुए बूढ़े लोग बड़े अफसोस के साथ कहते: "हमारे यहाँ अगर हवा की तरह पानी भी भरपूर होता, तो हम अपने कतारतान को लहलहाता बाग बना देते।" उन्हें अलतीनसायबामियों से डाह होती, जिन्होंने अपने यहाँ बाग, फुलबारियाँ और सागबाडियाँ लगा रखी थी वे चाहते थे कि उनका गाँव भी हरियाली में डूबा रहे। इसके लिए पानी चाहिए था, पर कहाँ वह पानी! केवल कुछ ही आगनों में इक्के-दुक्के फलदार वृक्ष दिखाई देते थे वे प्राकृतिक दृश्य में चार चाद लगाने के साथ-साथ उसकी भीषण एकरमता को भी भग करते थे। मुरातअली की सूबानी सबसे बड़ी और सुन्दर थी, पर उसे सीचने और उसकी सभाल करने में बूढ़ को कितनी मेहनत करनी पड़ती थी, कितना समय लगाना पड़ता था! यदि मुरातअली रोज़ सुबह-शाम नदी पर उतरकर उसमें से सुराहियों में ठण्डा पानी लाकर पेड़ को न सीचता, तो वह कभी का सूख गया होता। बूढ़ को सबसे ज़्यादा मुश्किल गरमियों के भुलसाते दिनों में हुआ करती थी, जब गूरज अतोपणीय सालची की तरह भील और नदी का सारा जल ढकींग जाता था। ऐसे दिनों मुरातअली बड़े भोर में पानी साने पहाड़ों में चला जाता था। वह एक भी बूढ़ न छलकने देने की कोशिश करता, एक चश्मे में दूसरे पर जाता, बड़ी सावधानी बरतना बहुमूल्य जल दो छान-छानकर सुराहियों में भरता। बूढ़ कभी-कभी स्वयं प्याग

के मारे तड़पता, लेकिन एक भी दिन ऐसा नहीं जाता, जब वह अपने पिता के लगाये वृक्ष को न सींचता।

उस सुबह मुरातअली एक हाथ में मिट्टी की सुराही और दूसरे में ताबे की सुराही लिये सर्पिल पथरीली पगडण्डी ने सावधानीपूर्वक नदी पर उतरा और उनमें पानी भर लिया। वापस ऊपर चढ़ना काफी मुश्किल था। अभी-अभी भोर होने के कारण वृद्ध को खड़ी पगडण्डी के घूमर और ओममिक्त पत्थर साफ नजर नहीं आ रहे थे। वह एक-एक डग भरता ऊपर चढ़ रहा था हर कदम पर सुराहिया लेकर चलना दूभर होता जा रहा था। वृद्ध का सफेद कुरता पसीने से तर हो चुका था। ठीक घर के सामने पहुँचते ही उसका पैर फिसल गया और वह गिर पड़ा। मिट्टी की सुराही टुकड़े-टुकड़े हो गयी और ताबे की हाथ से छूटकर उसे खिजानी-मी पगडण्डी के पत्थरो से टकराती नीचे लुढ़कने लगी। उल्टे हुए मुरातअली तीव्र पीडा के भारे कराह उठा उमकी कोहनियो और घुटनो की खाल छिल गयी थी। उसने आस्तीन से चेहरा पोछा, अपने गीले हाथो को पाजामे में रगटकर साफ किया, कुछ बड़बड़ाया और भारी-भारी मास नेता सुराही दूढ़ने धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। खुदाकिस्मती में सुराही लुढ़ककर नदी तक नहीं पहुँची, किनारे के ककडो में रुक गयी। मुरातअली ने उसमें दोबारा पानी भरा और फिर ऊपर चढ़ने लगा, पर इस बार बलखानी पगडण्डी में नहीं, बल्कि मीधे खड़ी डलान में। उमका मारा बदन दुश्च रहा था, सुराही के कारण हाथ घिचा जा रहा था, किन्तु मन्ताप वृद्ध को शक्ति प्रदान कर रहा था और मुरातअली खाली हाथ में विरल भाड़िया और निकले हुए पत्थरो को पकड़-पकड़कर हटपूर्वक बड़ी मुश्किल में ऊपर चढ़ता जा रहा था। आखिर घर पहुँच ही गया। मुरातअली ने टोकर में फाटक टेन अहाने में प्रवेश किया। उसने बेतली में थोड़ा चाय का पानी रखा और बाकी बचा चिर-अभीष्टित वृक्ष में दे आया।

उमकी खोज अभी दूर नहीं हुई थी। उसने बेटी के कमरे का दरवाजा खोला। मैगरी मीठी नीन्द गोपी हुई थी। आसु, तीर पर वृद्ध अपने बच्चो को आवश्यकता में अधिक समय तक पलंग तौलें देय वृद्ध हो उठने है, तिस पर उस सुबह मुरातअली को किमी-न-किमी

और ओस्मा* के पौधों से लहलहा उठनेवाली थी। मुरातअली की नज़र सूबानी के वृक्ष पर टिक गयी

गृहस्वामी का गर्व - विशाल वृक्ष पहरेदार की तरह अपनी शाखाएँ फुलवारी, बड़े-से बदरग हुए कालीन से ढके चबूतरे, कच्चे, जीर्ण-शीर्ण नीचे धर पर फैलाये हुआ था। बाहर के आदमी को धर और आगन मामूली लग सकते थे, लेकिन मुरातअली के लिए वे दुनिया में सबसे प्यारी चीज़ें थे, वह वही भी क्यों न होता अपने घर, सन्दाल**, जिसके पास बैठकर अपनी बूढ़ी हड्डियों को गरमा सकता था, अपनी सूबानी को सर्वाधिक प्रिय और अभिलषित वस्तुओं की तरह याद किया करता था। और ऐसी यादों से दिल को बड़ा मुकून मिलता है।

सफाई का काम निबटाकर पिता और पुत्री ने चबूतरे पर नाश्ता किया। कपास के खेत कतारताल से कई किलोमीटर की दूरी पर थे। वहाँ का रास्ता सीधा और सुविधाजनक था, लेकिन अपने खेत पर समय पर पहुँचने के लिए मुरातअली को घर से ज़रा जल्दी निकलना पड़ता था। वैसे वह लम्बे फासलों का आदी हो चुका था गेहूँ के खेत, जिनमें वह नयी जमीन को कृषि योग्य बनाये जाने तक काम करता रहा था, पहाड़ के काफी पीछे थे और उन तक पहुँचना वर्तमान खेत पहुँचने की अपेक्षा वही अधिक कठिन था।

दिन चढ़ रहा था। पर्वतों के ऊपर आकाश रक्ताभ हो उठा। घड़ों और घाटियों में गुलाबी, उदय होते सूर्य की किरणों से किञ्चित् आलोकित कोहरा छाया हुआ था, किन्तु दूरस्थ गिरि-शिखर दृष्टिगोचर होने लगे थे, और उन पर हिम बुझारा की टोपियों के कारचोवी बेल-बूटों की तरह जागृतमान हो रहा था।

बरतन उठाने के लिए चबूतरे पर चढ़ा मुरातअली सामूहिक फार्म की फैंसी हुई जमीन की ओर देखता, सम्मोहित-मा खड़ा रहा। मिट्टी

* ओस्मा - सो० मध्य एशिया का पौधा जिसके रस में स्त्रियाँ अपनी भीड़ें रगती हैं। - म०

** सन्दाल - एक प्रकार की अगीठी जिसमें गर्म राख रख दी जाती है और ऊपर से बड़ा कम्बल ढक दिया जाता है। सर्दियों में लोग इसके चारों ओर कम्बल के अन्दर अपने पैर रखकर बैठे रहते हैं और इस प्रकार उन्हें गर्म रखते हैं।

के बकुले पर मे बसन्तमान मे अन्तनीनगाव जानेवाली गडर मे दिशाई देती थी। वह अपने दिन, गोंतनाओं और टोनी के बानों बाटे मे गोंतना न जाने कितनी बार इग गडर मे गुजरना रहा था पहाड़ों के बीच की गडर भी वहाँ मे गार-गार नजर आ रही थी। वह रहा शीगीबुनाक नाम का गांव। उधर आगिर मुँहे मे तिनकर गडर राजमार्ग की धूमर पट्टी साँपकर अन्तनीनगाव के बान मेंवो की ओर बनी जाती है। गेन वहाँ मे दिशाई नहीं देता; वह पर की दमान के कुछ दायाँ ओर है। उगरी आगों के आगे बेंवन पहन पाग मे महहनहानी और ग्वाबिगो फूनों मे दकी स्नेपी फैली हुई है ज्या-ज्या आगे जाइये त्यो-त्यो जमीन सूथी होनी जाती है; वह त्रिनि कूम की गरम मागों मे भुनगी हुई है, उगमें आर-गार लू चलती रहती है। वहाँ की जमीन मन्न व देनेदार है और बेंवन नागदौना के धूनभरी नीरस गुच्छेदार पीघों मे दकी हुई है। वह अछूती धरती है। और उनके आगे रेगिस्तान के लान टीले हैं, जो दूर, बहुत दूर धूमर त्रिनि तक फैला हुआ है और इमनिग निम्गीम प्रतीत होता है

अछूती धरती सदियो मे स्वामी की प्रतीक्षा कर रही धरती। मुरातअली को बरबस पार्टी की जिला समिति के सचिव जुराबावेव के वे शब्द स्मरण हो आये, जो उन्होंने पिछले वर्ष सामूहिक फार्म की मीटिंग मे दिये भाषण मे कहे थे: "आपने हाल ही मे कृषि योग्य बनाये अलतीनसाय भूखण्ड मे ओरदार फसल काटी है। अब सारी अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने की कोशिश कीजिये—वह आपसो दिल खोलकर इनाम देगी। अछूती धरती मे खजाना गडा है, जो हन सबको हमेशा-हमेशा के लिए समृद्ध बना देगा!"

कपास के खेत भी, अछूती स्तेपी भी—मुरातअली सब को अपनी सम्पत्ति मानता है। उसने एक बार फिर उन पर मालिक के अन्दाइ मे नजर डाली और सोचने लगा कि उन्हे उस अमूल्य खजाने को खोद निकालने के लिए कितनी मेहनत करनी पडेगी, अचानक उसे घ्यान आया कि उमे काम को देर हो रही है। मेखरी पिता की प्रतीक्षा करती फाटक के बाहर खडी थी। मुरातअली बरतन उठाकर घर मे रख आया और कधे पर कुदाल रख बेटी के पाम जाने के लिए कुछ इग ही भर पाया था कि फाटक खोलकर आगन मे उसका पुराना दोन्

गफूर आ गया। मुरातअली अचम्भे में पड़ा अनपेक्षित अतिथि को ताकता रक गया। उसने गफूर को अरसे में नहीं देखा था और उसे बड़ी मुश्किल से पहचान पाया।

मेहमान के कपड़ों का नज़ारा देखने लायक था। उसके पैरों में रस्सी को कई बार लपेटकर बांधे रबड़ के पुराने जूते थे। रंग उड़कर सफेद हुई, कीचड़ में सनी फौजी पतलून के पायचे पुराने ऊनी भोजों में उड़से हुए थे। मिरज़ई पतलून में कुछ कम पुरानी और घोंड़ी मज़बूत थी। बहुरूपिया की इस पोशाक पर तुरा यह था कि टोपी बिल्कुल नयी और अभी-अभी सरीदी हुई थी।

गफूर ने गृहस्वामी को उसे जी भरकर देख-निहार लेने का मौका दिया और फिर पीले-पीले दात निपोड़ता मुस्कराकर मुरातअली की ओर बढ़ा। मित्रों ने पहले एक दूमरे का आलिंगन किया और फिर हाथ मिलाकर हाल-चाल पूछना शुरू किया।

“अहा, लौट आये, कितना अच्छा हुआ!” मुरातअली सुरी से कह उठा। “काफी अरसा हो गया रिहा हुए?”

“यहाँ कल ही पहुँचा।” गफूर ने नाक-भौंह सिकोड़ी। “सोचा था कि कम-से-कम घर पहुँचकर आराम से रहूँगा। सोचा था कि भानजी मुझ पर रहम करेगी, मदद का हाथ बढ़ायेगी। लेकिन ऐसा कभी हो सकता था! अपनों के पास आया, पर मेरे साथ मिले गैरी की तरह ”

“सुनो, सुनो, प्यारे! जो हुआ सो हुआ। आयकीज़ क्या पुरानी बातें अभी तक नहीं भूल पायी?”

“अरे, छोड़ो भी! उसने खुद ही मेरी चुगली घाई, और अब पहचानने तक को तैयार नहीं होती। पत्थर का दिल है उसका, पत्थर का!”

मुरातअली अविश्राम के अन्दाज़ में सिर हिलाता मुनता रहा, और गफूर ने इसे सहानुभूति की अभिव्यक्ति समझ आयकीज़ के साथ हुई अपनी मुलाकात के बारे में उत्तेजित स्वर में नमक-मिर्च लगाकर मुना डाला।

वैसे उनकी मुलाकात हुई ऐसे थी। आयकीज़ के पास गफूर जब अचानक आ धमका, वह घाम सोवियत में अपने काम में व्यस्त थी।

वह नशे में था और बड़ी मुश्किल में अपने पैरों पर टिक पा रहा था। आयकीज को गुम्गे में नाल दूई आंगों में घुग्ने हुए गफूर ने पट्टी ब्राकाड में व्यग्यपूर्वक कहा

“गलाम, भानजी! तुम अपने बदनमीव मामा में मिलने क्यों नहीं आती थी, क्यों?”

आयकीज ने दुआ-गलाम किये बिना कुग्गी की ओर संकेत किया।

“मेहरबानी करके बैठिये और बनाविये कि मैं आप की क्या सेवा कर सकती हूँ?”

गफूर लडखडाया और मंज पर हाथ टेक आयकीज के नजदीकआकर उसके मुँह पर शराब का भभका छोड़ना हुआ घृणापूर्वक फुमाफुमारा

“क्या सेवा कर सकती हों, भानजी? तुमने मुझे दोस्तों में, घर से जुदा कर दिया, बदनमीव बना दिया, बेइरबन किया, और अब पूछती हो कि क्या सेवा कर सकती हूँ? आज मेरा सगा बेटा तक मुझे पहचानने को तैयार नहीं है। मेरी बेइरबनी मेरे दिल में कटे-सी छटक रही है।”

आयकीज की आंखों के आगे अधेरा छाने लगा, होंठ कापने लगे वह अपने पर नियंत्रण रखने की कोशिश करती मेल-मिलाप के स्वर में बोली

“बैठिये, शान्त हो जाइये। अपने दिल का बुझार निकालने के लिए यहाँ नशे में आना जरूरी नहीं था।”

गफूर करीब-करीब बैठ ही चुका था, पर आयकीज के अन्तिम शब्द सुनते ही ऐसे उछल पडा मानो कुरसी पर अगारे पड़े हो।

“चलो-चलो, दिखाओ अपनी ताकत, भानजी! कह दो सबने तुम्हारा मामा मुजरिम है, वह खुशी में ज़रूरत से ज्यादा पी गया है!”

आयकीज आग-बबूला हो रहे गफूर की ओर ध्यान दिये बिना नोटबुक में कुछ लिखती रही, और गफूर पूर्णतया आत्मसमय खो मंज पर मुक्का मारा और चीख उठा

“ऐ भानजी, मुनो मैं क्या कहता हूँ। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड था? मैंने कभी तुम्हारे साथ बुरा बरताव किया? नहीं, भानजी, फर्ज तो तुमने अदा नहीं किया। तुमने अपने मगे मामा पर तोहमत लगायी थी। लेकिन याद रखना मैं चुप बैठनेवालो में से नहीं हूँ!”

आयकीर्ण अन्यमनस्कता से भुस्करा पड़ी। उसने तो सोचा था कि गफूर के साथ जो कुछ हुआ उसके बाद वह होश में आ जायेगा। क्योंकि उसने न्यायालय में सामूहिक फार्म का अनाज चुराने का आरोप स्वयं स्वीकार किया था। स्वीकार तो कर लिया था, पर स्पष्ट है उस पर पछताया नहीं था, सदा उसके हृदय में प्रतिशोध की द्वेषपूर्ण भावना मुलगती रही थी, जो अब मूसलधार वर्षा के बाद उफनती गंदे पानी की धारा की तरह किनारे तोड़ बह निकली थी।

“आखिर आपको मुझमें क्या चाहिए?” नोटबुक से मिर उठाकर आयकीर्ण ने पहले की तरह आत्मसयम में पूछा।

भानजी की शान्तचितता ने गफूर को परास्त कर दिया। वह कुछ शान्त हो गया और आयकीर्ण से कोई मामूली काम दूढ़ने का अनुरोध करने लगा, जो चक्की पर ही सही, पर लोगों की नजरों से दूर हो। आयकीर्ण उसे केवल यही आश्वामन दे सकी उसे सामूहिक फार्म में शामिल किये जाने के बाद सबके साथ भेत में समान रूप से काम करने का अधिकार मिल जायेगा। गफूर अपनी बात पर अडा रहा, और आयकीर्ण भी हटी रही।

“दो में से एक चुन लीजिये या कुदाल, या फिर जहाँ मरजी हो, वहाँ चले जाइये। आपको यहाँ कोई नहीं रोक रहा है।”

गफूर मन-शान्त फिर भानजी पर आक्षेपों की बीछार करता हुआ धीमे-धीमे लगा। तब आयकीर्ण ने वह दिया कि वह अपने मामा में कोई वास्ता नहीं रखना चाहती, और गफूर ने एसान कर दिया कि उसकी कोई भानजी नहीं है। इसी बात पर दोनों जुदा हो गये। गफूर सामूहिक फार्म के अध्यक्ष वादीरोव को दूढ़ने निकल पड़ा, पर वह पशुपालन-फार्म पर रूबा हुआ था। गफूर मन-ही-मन अटकने लगा रहा था कि उसमें कौन महानुभूति दिया सकता है। उसे मुरातअली की याद हो आयी और वह मुबह कुछ जल्दी उठकर कतारखान के लिए रवाना हो गया।

इस समय आयकीर्ण में अपनी मुलाकात का चिन्ता अपने पुराने दोस्त को गुनाने समय गफूर ने आमुओं की भरी बाध दी, अपनी बन्धना में मूब नमक-मिर्च लगा दिया, गालिया जोड़ दी और मुरातअली ने गिफ्ट गृहवासी के नाने चटपटे बनाये पकवान का रमागवादन

ने का किन्तु सारा विवेक सम्पूर्ण नहीं दिखाना और वेगल के
 करने का भी समझने दिखाना - उनके को पर लक्षणा, पर लक्षण
 रूप यह सम्पूर्णतः स्वर से कटा

दिए गये का कहे 'दोना मेरुपुत्र जगदी को हर गार इ
 काय से जगदः ही होना है' गुण कबही पर का कही? वेगल
 होना से ही गीति से जगिण ही बाधी। ही गुडे होनी मरक का
 गुण। जगदी गीति का मरुपुत्र का भी मरुपुत्र है, कायमेव गुणमेव
 से विद्या कायमेव से जगदि गीति की भी।

गुरु न गरी काय नेकर काविदाही से कटा

मुक्ति का दास। वेगल गुण कटोने वेगल ही कर्ता। गुण गुने
 गुणही मेकी का विद्या देगा

वेगदी पाठक का गटका विने गरी कच का ममाचार्य पर
 बीच-बीच में भीरगा में कभी विद्या की ओर देख रही थी, कभी गुरु
 की ओर। एक बार गुणों मकर मिलने ही मुगाअनी ने जन्म की
 और गुरु की कौटनी पर हाथ रख जमा-वाचना के स्वर में कटा
 'मुझे माह करना दोगल, मुझे विनयुप कुरमन नहीं है, काय
 को देख हो रही है। भागो तो हमारे माय कनी।"

मिद बातचीत करने हुए पाठक ने बाहर आये और मेहरी के
 पीछे-पीछे मय्ये-मय्ये इग भग्ने कचने मगे। ध्रुव नेव हो कनी थी।
 ओम को विदा कर चुकी हरी पाग में मादक गुगल्य आ रही थी।
 और पयिको को अपनी याद दिवाने के लिए दूरम्य म्नेरी मामने से
 जलती हुई सू के भोके भेज रही थी। गुरु रेत के कणों के कारण
 आये मीचता व्यग्यपूर्वक बोला

"गुना है आप लोग कुछ दिनों में रेगिम्नान में बसने जा रहे हैं?"

मुरातअली उदास हो उठा।

"यह बात क्या तुम्हारे कानों तक पहुँच गयी है? यह मही है
 कि पहाडी गावों के सामूहिक किसानों को नयी जमीनों के कुछ नब्दीक
 बसने का मुभाव दिया जा रहा है। हम इस भाल अछूनी जमीन को
 खेती योग्य बनाना चाहते हैं," उसने कहा और मेखरी की ओर इगित
 कर कटु स्वर में बोला. "मेरी बेटी तो प्रवासियों में अपना नाम भी निखा
 चुकी है। अपने बाप के बारे में तो बिलकुल भूल बैठी है।"

यह सुन रही मेखरी उनके पास आकर कुछ नाराजगी और भिड़की के साथ बोली

“अब्बा! मैंने आपसे सलाह तो की थी ”

“सलाह की थी! पहले नाम लिखा आयी और फिर सलाह करने की सूझी। गर्म की बात है, बेटी! हाथ से ही निकल गयी है तू ”

मेखरी का चेहरा लाल-लाल हो गया, उसने सिर झुकाकर हठपूर्वक आपत्ति की

“हमारे सारे कोसोंमोल प्रार्थनापत्र दे चुके हैं।”

“हा, हा!” मुरातअली भडक उठा। “जिधर सब जा रहे है, उधर ही तुम भी। बाप की नहीं सुनती! बुजुर्गों पर यकीन नहीं करती! अरी बेटी, अगर सब वुएँ मे कूदने लग जाये, तो क्या तुम भी कूद पड़ोगी?”

“मै आपके बारे मे भी सोच रही थी, अब्बा,” मेखरी हार मानने को तैयार नहीं हुई। “क्योंकि नयी जमीने काफी दूर है ”

“तो क्या हुआ! मेरे पैर मजबूत हैं, मुझे कोई तकलीफ नहीं है।”

“लेकिन आयकीज तो ”

“बम करो, बेटी। आयकीज ने अछूनी जमीन के बारे मे सोचा, उसके लिए उसका शुक्रिया। उसने अच्छा काम छेडा है। हमे जमीन की जरूरत है और हमारे पास उसी की तगी है। लेकिन मै अपना गाँव नहीं छोड़ूँगा! यहाँ मेरे बाप की कब्र है! यहाँ उनका अपना पसीना बहाकर बनाया घर है! यह मेरे पुरखों की जमीन है, और मै यहाँ मे कही नहीं जाऊँगा। मुन लिया? नहीं जाऊँगा। और तुम भी नहीं जाओगी! चाहे जितनी दरमास्ते लिख डालो—हर हालत मे हम कतारताल मे ही रहेगे। चाहे आयकीज, आलिमजान और करीम अपने सारे दूर के, नजदीक के रिश्तेदारो समेत वहाँ जा बसे।”

वे राजमार्ग के पाम पहुँचे, जहाँ से अब हाल ही मे जोते हुए बपाम के भेत और गाव भूरे-से रंग मे भिन्नमिलाते, बसन्तकालीन भीनी मखमली हरियाली का परिधान ओंठे दिखाई देने लगे थे। मुरातअली मौन हो गया। ये भेत उसके पसीने से भीचे गये थे—इस वस्ती

मे वे लोग रहते थे, जिनके साथ उसने कपाम की सेनी की थी, पानी हासिल किया था, अपनी, मेखरी, भानूभूमि की किम्मत जगाई थी, मुसाहाली बढ़ाई थी। वह इस जमीन को प्यार करता था और मौन रखकर उसके प्रति अपना सम्मान व्यक्त कर रहा था...

पथिको को रुकना पड़ गया गफूर के एक खड के जूते की रम्मी खुल गयी थी। वह कराहता हुआ उसे ठीक करने लगा और फिर तनकर मेखरी की ओर मुड़ा, चुपके से उपदेशात्मक स्वर में कहने लगा

“तुम बाप की मरजी के खिलाफ मत जाओ, लडकी। बडो की अबजा करना गुनाह होता है। तुम, नौजवान लोग, हर वकल जल्दबाडी करते हो, जिधर जी में आता है, सिर पर पैर रखकर भागने लगते हो। तुम जल्दबाजी मत करो, अच्छी तरह सोच-समझ लो, अब्बा की अक्लमदी की बातें सुनो। तुम उसे वहाँ घसीट ले जा रही हो? उजाड स्तेपी में? पर वहाँ तो सिर्फ उकाब ही आजादी से मडरा सरने है,” गफूर गुस्से से हाफने लगा और भौंहे सिकोडकर आगे बोला; “तुम्हारी आयकीज तो बस उच्च अधिकारियों की नजरों में चडना चाहती है। लेकिन किसान—वे बेवकूफ नहीं हैं, उन्हें जबरदस्ती रेगिस्तान में नहीं घसीटा जा सकता है। मैं जो कह रहा हूँ—देख लोगी।”

“आपको यह तो मालूम ही नहीं कि कितनी दरमास्ते दो जा चुकी है।”

गफूर ने हाथ हिला दिया।

“दरमास्त क्या होती है? कोरा वागज! लोग अपना इरादा बदल देगे। कौन घर-बार छोडकर जाना चाहेगा? और मेरी भी यही मलाह है, लडकी अपनी दरमास्त वापस ले लो। बाप का दिन मत तोडो।”

“पर मैं बीमे” मेखरी खबराहट से हाफती हुई बोली, तिनू पिता ने गुस्से में उसे टोक दिया

“शुन रह, बेगर्म!”

मेखरी का खेतरा पच हो गया, उसने अपने हांड बगकर भीर दिखे और कपाम के सेना तक मुझ में एक भी शब्द नहीं निराया।

निर्मल चश्मा

तेज गरमी पड़ रही थी मध्यान्ह का मूरज मानो भूल गया था कि अभी गरमी नहीं, वसन्त है, पूरे जोर से तप रहा था। आयकीज अपने घोड़े बायचीवार पर कई किलोमीटर का सफर तय कर जिले से लौट आयी थी। उसका चेहरा जल रहा था। घोड़े से उतरकर आयकीज ने उसे बाध दिया और स्वयं गरमी में लम्बे सफर के बाद हाथ-मुह धोने अहाते में नाली के पास चली गयी। अहाते में कुछ ठण्डक थी मन्द पर्वतीय पवन के झोंके पोपलर और वेद की ताजा पत्तियों को हिला रहे थे, सारे अहाते में तेज मादक मुग्ध फैलाते फूलों को लहका रहे थे। नाली के पास, फूलों के बीच, सहज की छाया में एक चौड़ी लकड़ी की छाट बिछी थी। शीतल पानी से हाथ-मुह धोकर आयकीज छाट पर बैठ गयी और सोच में डूब गयी गरमी के कारण घकने और तड़िल हो जाने पर इस प्रकार निश्चल बैठकर शान्ति और ठण्डक का आनन्द लेना, पानी पर डोगियों की तरह तिरती सेव की नन्ही-नन्ही श्वेत पखडियों की ओर देखना, आराम से सोचना, यादों की दुनिया में खो जाना कितना अच्छा लगता है।

वह नाली को ताकती हुई अपने पति आलिमजान के बारे में सोच रही थी, पर्वतीय समीर और कल-कल करती नाली की जल-धारा मानो उसके नाली के जल सदृश निर्मल और स्वच्छ विचारों को दोहरा रहे थे, जिसके तम में नाना रंग के ककर साफ दिखाई दे रहे थे।

आलिमजान इस समय बहुत दूर था। उसने दो वर्ष पूर्व मस्थान के पत्राचार विभाग में प्रवेश लिया था और हाल ही में उसकी आगामी परीक्षाएँ देने गया था। वह आयकीज को अकसर लिखा करता था, उसके पत्रों की प्रत्येक पंक्ति उसके प्रति चिन्ता और प्रेम से ओत-प्रोत होती थी; किन्तु पत्र स्वयं आलिमजान की कमी पूरी नहीं कर सकते थे। आयकीज को अपने पति के साथ शाम को यहाँ, घर में होनेवाली लम्बी मायवालीन बातचीत, शाम भोजन, कार्यालय और

केन्द्र में होनेवाली प्रेरण शक्ति ही होती। यह आदर्श के साथ उन
वृत्तियों का नाम। उन्हें दुष्ट और कष्ट होने पर उनकी मद की पूर्ण
व्यवस्था करने से कष्ट भिदाहक साथ साथ नैतिकता प्रदर्शित
के लिए समर्थ सिद्ध था, और उनके जीवन में नयी वृत्तियाँ आ देनेसे
वेच के गते शक्ति, विद्यालय और शास्त्र प्रदान करने से, कोर्सेट के
धरति ही कोण से कृत्रिमता गृह करने जैसा होता है। वह मध्य
को उद्योग से परिचरित कर देता है, पुष्पों और वृक्षों में सम्मिलित
है, नयी प्रकृत का सूत्रन करता है।

आदर्शों की दिवानी इच्छा थी कि इस समय पनि उनके न
हो। इस समय इसी लिए कि उगने आने कर्मों पर अत्यन्त महत्त्व
विशेषकारी उपाई है।

वाच यह भी कि सुरावायेव ने अद्भुती स्तेपी में छिपे खदानों
बाते में जो राह्य करते थे, वे केवल वृद्ध मुगलप्रती की ही मद रह
रहे थे। आदर्शों भी उन्हीं के बारे में सोच रही थी। कुछ वर्ष पूर्व
कालीनमापवामी आने में तो पानी ने आवे थे, और उमीन
उन्हे जोरात पगन प्रदान की थी। लेकिन निचिन मेंनों के पान
हमारी जमीन भी पड़ी थी; वहाँ केवल भुनमा देनेवाणी हवाई
कना करनी थी और पूरा में नागदीना अनाथ बच्चे की तरह सु
करना था। आदर्शों को पूरा विश्वास था कि हन के स्वर्ग में बनि
है। इन सोचियन के कालीन से ढका जा सकता है। इन इका
1900 के आदर्शों को मरनी है।

उन्हीं के साथ में आदर्शों अपना काफी समय स्तेपी में गुजार
... के लिए ... के बीच लगी हठी-मठी रथ
... में आवे चौधिया देनेवाले रत
... के इन्को की ओर देखनी थी
... की जायेगी, लेकिन
... और यह काम तुरन्त, इ
... के बच्चा-बच्चा छानक
... को वहाँ ले गयो। इ

उमरबाह-अना, जिन्हे जीवन का बारी अनुभव था, और जानकार कमी निचोई-विनोपज का समर्थन मिलने से आयकीड का इगदा परवा हो गया। उमने जुराबायेव की मनाह नी और उन्होंने गिमनोव व पोपोदिन को, जिने कुछ समय पूर्व ही मसीत-कृष्ण-मंडलन गिनेनव नियुक्त किया गया था, जिना समिति के धूरो के मामले अट्टी घग्गी को कृषि योग्य बनाने और पहाडी गावों के सामूहिक हिमानों के नदी जमीनों पर पुनर्वासन की ठोस योजना तैयार करने के लिये बरने की जिम्मेदारी भी उमके माथ कर दिया। जुराबायेव के अनुरोध पर डिवाइज-इंजीनियरो के एक टन को इन जल्गती लोगों की सहायता के लिए भेज दिया गया।

योजना तैयार हो जाने पर आयकीड, पोपोदिन और गिमनोव न गिपोई तैयार की। उस पर पहले सामूहिक फार्म के पाटी-अट्टन व विचार किया गया, तन्पश्चान्-सामूहिक फार्म के कार्यालय में।

धूरो व कार्यालय ने योजना को स्वीकृति प्रदान कर दी। बंवन कादीगेव उदाय भीत और मन में वैर-भाव छिपाये हुए बैठा, भीड़ चढ़ाये, बड़े जल्हाह से स्नेही की कृषि योग्य बनाने में हीनवाने साभो व बाते में बता रही आयकीड की ओर देख रहा था। कादीगेव ने न उमके समर्थन में कुछ कहा, न ही विरोध में, बेटे-बेटे बंवन घरी पायपूर्व टिप्पणी की

‘बुद्धिया जिल में बीने ही बडी मुनिकन से घुम पानी है, निम पर उमने अपनी दुम में छलनी और बांध दी।’

आयकीड को इन शब्दों पर आश्चर्य हुआ। “नयी जमीनों को कृषि योग्य बनाने में सामूहिक फार्म की कितना पायदा होगा, इसे कादीगेव को नहीं तो और किसको समझना चाहिए, उमने सोचा। “क्या वह मजबूत अभी भी नहीं समझता कि लोगों का हमने कितना भला होगा?”

जब सामूहिक फार्म अवनतीनमाय भूखण्ड को कृषि योग्य बना रहा था कादीगेव ने खय्य करने, निराशावादी भविष्यवाणियाँ करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी और सामूहिक फार्म के किसानों के पानी को निकालने तथा गरमी से तडकी जमीन पर कपास पैदा करने में सन्देह भी अधिक नहीं छिपाया था। लेकिन उमकी भविष्यवाणियाँ सब नहीं निकली अवनतीनमायवाणियों के श्रेणीपूर्ण समूह ने अपना

जिसका कारोबार कर दिया। जब कि कारीगरी को, किसी भी
 नया सामूहिक किसानों की नजरों में कारी कम हो चुकी थी, किसी
 सुननी नहीं। और यदि बड़े बांग में कारीगरी के पक्ष में बोलते-बोले
 किया कारीकारों के नये अग्रज सुभाषाओं ने हमसे न सि
 होगा जो उसे अग्रज पद में हाथ पोंना पड़ सकता था। लेकिन उस
 लिए सब ठीक-ठाक हो गया और उसने शान्ति और आत्मविश्वास
 फिर प्राप्त कर लिया। सामूहिक फार्म शक्ति जुटाना बहुत ज़रूरी
 था क्योंकि वह कारीगरी सामूहिक फार्म का अग्रज था। और
 जब कभी सामूहिक फार्म की उपलब्धियों की बात छिडती, आत्ममन्तों
 के साथ वह कह उठता 'हमने नहर खोदी' हमने पानी दूना!

कारीगरी मजबूत सामूहिक फार्म के सम्मानित अग्रज पद का आ
 हो चुका था। वह दूसरों की बाँट फगल काट रहा था, पर उस
 अन्नकरण शान्त था वह मोचना था - आगिर मैं खुद को सामूहिक
 फार्म से अलग तो नहीं कर सकता। अन्ततः कारीगरी ने स्वयं
 यह विश्वास दिला दिया कि वह सब, जो सामूहिक फार्म के किसान
 ने किया है, उन्होंने उसके गोधे और मन्त्रिय महयोग में किया है, अ
 पूर्णतया आश्वस्त हो गया। अब वह पहने में भी अधिक निश्चिन्त हो
 कुरसी पर जमकर बैठा था, और उसकी बात भी पहने से ज्यादा मा
 जाती थी दूसरों द्वारा की हुई मेहनत के यश का लाभ उठाकर।
 मध्यम श्रेणी के सामूहिक फार्म के अग्रज में विशाल कृषानोत्पा
 फार्म का संचालक बन बैठा था। उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाने में उस
 चेहरे-मोहरे में भी परिवर्तन आये काली ऊनी फौजी कमीज
 बांधी जानेवाली पेट्टी में न जाने कितने नये छेद और करने पड़ ग
 चेहरा गोल हो गया, ठोडियाँ तीन हो गयी, आँखें सक्की दरारों
 बदल गयी, और उन पर लाल-लाल फूले गालों की गहिरियाँ पहले
 ऊपर चढ़ने लगी। कारीगरी का लोगो से बातचीत करने, सभाओं
 भाषण देने का तरीका भी बदल गया वह शब्दों का उच्चारण इत
 धीरे-धीरे अहंकारपूर्ण आडम्बर के साथ करता था, मानो उन्हें उध
 दे रहा हो। वैसे वह यह मानते हुए कि उसकी कृषण टिप्पणियाँ अ
 लम्बे-लम्बे भाषणों से अधिक बजनी होती हैं, उधार भी ज्यादा न
 दिया करता था।

कहने का मतलब है, कादीरोव पूरी तरह सफलता प्राप्त कर रहा था।

और लोग उसके बारे में तरह-तरह की बातें करते थे, क्योंकि लोगों की राय स्तेपी की तरह भिन्न-भिन्न होती है उसमें कटीली भाड़ी भी मिल जाती है, कड़वा नागदौना भी, नयनाभिराम फूल भी दिखाई देते हैं, हवा के झोंके से नम्रतापूर्वक जमीन से लग जानेवाली नरम घास भी. अलतीनसाय में भी यही बात थी। बहुत से कहते थे कि अध्यक्ष को घमण्ड हो गया है, अपनी गलतियों के बारे में भूल गया, कादीरोव इस पर एतराज करता "हाँ, मैंने गलतियों की, यह सच है। लेकिन मैंने अपनी गलतियाँ मान लीं। न जाने किस जमाने की बातें हैं, किसी को याद नहीं है।

अध्यक्ष के अनुभव और निस्वार्थता की प्रशंसा करनेवाले चापलूसों की भी कमी नहीं थी। निःसन्देह कादीरोव उनसे बहम नहीं करता था, केवल कृपापूर्वक मुस्कराता था।

आयकीज को कादीरोव का आत्मसन्तोष पसन्द नहीं था। लेकिन माथ ही उसे सुशी भी होती थी क्योंकि कादीरोव का सामूहिक फार्म की सफलताओं की डींग हाकने का अर्थ था कि वह आयकीज की सत्यता स्वीकार करता है। जो सपने उसके ह्याल में असाध्य माने जाते थे उन्हें सच होता वह अपनी आँखों में देख चुका था, अपनी हाल की पराजय पर सन्तोष कर बैठा था—और क्या यह सराहने लायक बात नहीं है? चाहे वह मोर की तरह पूँछ फैलाकर नाचता रहे, चाहे दूमरो को मिले घस के मुर्खाब के पर अपने को लगाकर सजता रहे। उसे यानी आयकीज को घस नहीं चाहिए। उसके लिए तो इतना ही काफी है कि उसका सपना सच हो गया और अब कादीरोव मरीमें लोग भी जनता की शक्ति में विश्वास करने लगे।

उमें इस बात में सन्देह नहीं था कि कादीरोव जैसी आत्माभिमानी अध्यक्ष नहीं सफलताओं की आशा दिलानेवाली स्तेपी को कृपि योग्य बनाने की योजना को सहर्ष स्वीकार कर लेगा।

और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी कि कादीरोव द्वारा सामूहिक फार्म के कार्यालय में की गयी टिप्पणी में आयकीज परेशान हो उठी थी। यह सच है कि कादीरोव मुझे आम कुछ नहीं कहता था।